शोध मंथन Vol. XI No.IV Oct.-Dec. 2020 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Impact Factor 7.760 (SJIF)


# नारी जाति के उदारक के रूप में केशव चन्द्र सेन की भूमिका

*डा0 वन्दना सैम्लटी*
*एसोसियेट प्रोफेसर, इतिहास विभाग,*
*एम.एम.एच.कालेज, गाजियाबाद*
*ईमेलः vandanasamelty@gmail.com*

*श्रुति*
*शोध छात्रा, इतिहास विभाग,*
*एम.एम.एच.कालेज, गाजियाबाद*
*Shrutikasana667@gmail.com*

***सारांश***

*नारी समाज का एक महत्वपूर्ण भाग है। प्राचीन काल से आधुनिक काल तक नारियों की दशा में अनेक परिवर्तन हुये। यह वह दौर था जब देश में नारी प्रताडना अपने चरम पर थी। आधुनिक युग के पिता कहे जाने वाले राजा राम मोहन राय ने लार्ड विलियम बैटिक के सहयोग से सन 1829ई0 में सती प्रथा जैसी कुरीति को गैर कानूनी घोषित करवा तो दिया था, किन्तु क्या वास्तव में इतना महिलाओं को उस प्रताडना से मुक्त करवाने हेतु काफी था। जहाँ प्राचीन काल में देश में नारियों को पूज्जनीय माना गया वही मध्यकाल में नारियो की स्थिति में आई निम्नवत गिरावट का भी इतिहास साक्षी रहा है। आधुनिक काल जाते जाते यह स्थित एक जटिल कुरीतियों में परिवर्तित हो चुकी थी। भारतवर्ष के आधुनिक इतिहास में पिछली शताब्दी बहुत महत्वपूर्ण मानी गई है। वर्तमान भारत के अधिकांश निर्माणकर्ताओ का जन्म इसी शताब्दी में हुआ था। अनेक त्रुटियो तथा निर्बलताओ को दूर करके नवयुग के सूत्रपात में अनेक महापुरूषो ने अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया था। केशव चन्द्र सेन की हम इन्ही महापुरूषो में गणना करते है।*

***मुख्य शब्दः*** *नारी दशा, उदारक, पुरातन पन्थि, सुधारवाद, अग्रनीति।*

## प्रस्तावना

आधुनिक विचारधारा एवं दृष्टिकोण से 16वीं व 19वीं सदी के समाज सुधारकों को अनेक सामाजिक व्यवस्थाओं को सुधारने हेतु कार्य करना पडा। इन्हीं में से एक पक्ष था– महिलाओं की दशा में सुधार ?

तत्कालीन भारतीय समाज में महिलाओं से सम्बन्धित अनेक सामाजिक कुरीतियॉ विद्यमान थीं। जैसे–बाल विवाह, शिशु हत्या, सती प्रथा, विधवाओं की दयनीय दशाा तथा नारी शिक्षा आदि। 18वीं सदी में हिन्दु धर्म में बेहद संकीर्णता पैदा हो गयी थी। बंगाल के कुलीनों का बहुपत्नि विवाह का रिवाज उपहास की सीमा तक पहुॅच गया था। [1]

3 अक्टूबर सन् 1861ई0 में केशव चन्द्र सेन ने ब्रहम समाज की एक विशेष बैठक बुलाई तथा शिक्षा पर एक प्रस्ताव पारित किया । इस प्रस्ताव को पेश करने से पूर्व उन्होनें शिक्षा पर

व्याख्यान दिया तथा महिलाओं के विषय में निम्न पंक्तियॉ कहीः–

''हमारी महिलाओं की स्थिति दयनीय है। इस चुनौती पर गंभीरता से विचार करने की आवश्यकता है। सम्यता के विकास में पृथ्वी पर ऐसा कोई देश नहीं है जिसकी महिलाऐं अज्ञान के गर्व में पडी हो तथा वह देश उन्नति कर गया हो । वास्तव में महिलाओं की खराब दशा हमारे देश की बुरी सामाजिक दशा की सूचक है। अतः हमें अपनी महिलाओं को अज्ञान व अंधविश्वास के मकड़जाल से बाहर निकालना होगा।[2]

ईसाई धर्म के प्रभाव से भारतीय समाज में 3 प्रकार की प्रतिक्रियायें हुई– पुराणपंथिया, सुधारवाद व उग्रनीति। इन नीतियों के पोषक में प्रमुख थे– राधाकांत देव, भवानीचरण बनर्जी तथा गौरमोहन विधालंकर। इन्होनें भी स्त्री शिक्षा के पक्ष में सन् 1822ई0 में ' स्त्री–शिक्षा–विधायक' नामक एक निबन्ध निकाला परन्तु सन् 1829ई0 में धर्म सभा स्थापित कर ' समाचार चन्द्रिका' शीर्षक पत्रिका के माध्यम से सती प्रथा के उन्मूलन का विरोध किया।[3]

उपरोक्त पंक्तियों के अध्ययन से हम यह अनुमान लगा सकते हैं कि तत्कालीन समाज में महिलाओं की स्थिति दयनीय थी। नारी शिक्षा के विकास हेतु इस दिशा में कई कदम उठाये गये। जिसमें ईसाई मिशनरियों की भूमिका महत्वपूर्ण रही।

**केशव चन्द्र सेन द्वारा किये गये प्रयास**

19वीं शताब्दी में समाज सुधारकों ने तत्कालीन सामाजिक व्यवस्था के विभिन्न पक्षों की ओर अपना ध्यान केन्द्रित किया । इसी क्रम में महिलाओं की दशा में सुधार किस प्रकार किया जाये, यह एक चुनौतीपूर्ण प्रश्न था। इस समय ईसाई मिशनरियां एवं पाश्चात्य शिक्षा प्राप्त बुद्धिजीवियों ने महिलाओं की पतनोन्मुख दशा के उन्नयन के लिये अनेक प्रयास किये। इस दिशा में सर्वप्रथम कदम राजा राममोहन ने उठाया तथा परिणाम स्वरूप अन्ततः सन् 1829ई0 में सती प्रथा का पालन करने पर कानूनी प्रतिबंध लगा दिया गयाप । इस दिशा में केशव चन्द्र सेन ने अपने कदम बढाये। इन्होनें महिला शिक्षा पर बल दिया तथा बाल विवाह को रोकने हेतु अविस्मरणीय कार्य किये।

महिलाओं की मुक्ति दिशा में केशव चन्द्र सेन ने सन् 1863ई0 में प्रथम साहसिक कदम उठाया । उन्होनें उमेश चन्द्र दत्त के साथ मिलकर '' वामा बोधिनी'' पत्रिका का प्रकाशन आरम्भ किया तथा इसके माध्यम से वे महिलाओं की स्थिति में सुधार लाना चाहते थे।[4] टेगोर परिवार की ''जोरा साको'' स्थित हवेली से सन्1863ई0 में ही उपासना कार्यक्रम आरम्भ किया गया । यहॉ से यूरोपीय तथा भारतीय शिक्षित महिलाओं को स्त्री शिक्षा के प्रचार व प्रसार के लिये भेजा जाता था।

महिलाओं की शिक्षा को बढाने हेतु वामा बोधिनी पहली संस्था थी। बाबू चन्द्र दत्त इस संस्था के प्रमुख सदस्य थे।[5] केशवचन्द्र सेन ने विभिन्न जातियों के व्यक्तियों के मध्य अंतरजातीय विवाह करने की साहसी परियोजना का भी गठन किया। इन्होनें कुछ साहसी नवयुवकों के एक समूह को इस बात के लिये राजी कर लिया कि वे निम्न या अन्य जाति की कन्या से विवाह करें। तत्कालीन समाज में बाल विवाह मुख्य कुरीतियों में से एक थी। बाल–विवाह के खिलाफ केशव

चन्द्र सेन के प्रयत्नों से 19 मार्च सन् 1872ई0 में ''सिविल मैरिज एक्ट'' बनाया गया, जिसके प्रावधानों के अनुसार 14 वर्श से कम आयु की बालिकाओं का विवाह कानून विरूद्व घोषित कर दिया गया। केशव चन्द्र सेन इस कानून के पारित करने के कारण ब्रिटिश सरकार के कृतज्ञक थे। केवल इतना ही नहीं बल्कि इस नये विवाह कानून के द्वारा 2 अन्य बुराईयों को भी दंडनीय घोषित किया गया।

1.अंतर्जातीय विवाह 2. विधवा पुनः विवाह

अंतर्जातीय विवाह को औपचारिक रूप से मान्यता प्रदान की गयी तथा विधवा पुनः विवाह को मंजूरी दी गयी।[6]

केशव चन्द्र सेन ने सन् 1865ई0 में ''ब्रहिका समाज'' की स्थापना की। इस संस्था का संचालन महिलाओं के हाथों में था। इस संस्था का मुख्य उद्वेश्य महिलाओं में धार्मिक –सांस्कृतिक तथा तकनीकी शिक्षा का प्रसार करना था। इन्हीं के प्रयासों से 6 जुलाई सन् 1865ई0 ''ब्रहम समाज'' का 36वां वार्षिक समारोह आयोजित किया गया । इस अवसर पर महिला ब्रहम समाजियों के लिये विशेष प्रवचन सभा का आयोजन किया गया । इसका संचालन देवेन्द्र नाथ टैगोर ने किया [7]

केशव चन्द्र सेन के भारत एवं इंग्लैण्ड में किये गये सामाजिक सुधार, उनके द्वारा किये गये प्रमुख व्याख्यनों ग्रंथो, निबन्धों तथा पत्रिकायें महिलाओं की स्थिति को सुधारने में तथा उनके जीवन सार को ऊॅचा उठाने में महत्वपूर्ण रहें।[8]

उन्होनें यह स्पष्ट रूप से कहा कि कोई भी समाज केवल अपने पुरूष वर्ग की पहल और भूमिका के साथ आगे नहीं बढ़ सकता है। महिलाओं को धर्म संस्कृति, शिक्षा, सामाजिक आंदोलन व विवाह आदि के क्षेत्र में समान अवसर प्रदान किये जाने चाहिये। केशव चन्द्र सेन ने इंग्लैण्ड में दिये गये अपने एक भाषण में स्पष्ट रूप से कहा था कि भारत में ईसाई मिशनरियों द्वारा प्रचारित ईसाई शिक्षा नहीं बल्कि एक स्वतंत्र व वैज्ञानिक शिक्षा भारतीय महिलाओं को मुक्ति दिला सकती है। उन्होनें ब्रिटिश महिलाओं से मिस मैरी कारपेंटर का उदाहरण देकर अनुसरण करने की अपील की। मिस कारपेंटर भारत में उदारवादी शिक्षा तथा भारतीय महिलाओं की मुक्ति हेतु आई थी।

15 जून सन् 1870ई0 में अपने एक अन्य भाषण में केशव चन्द्र सेन ने ऐसी स्त्रियों की आवश्यकता पर बल दिया जो भारत में महिलाओं के बीच उदार शिक्षा का प्रचार व प्रसार करें[9]। इसी कार्य के लिये ''ब्रहिका समाज'' ने उनको एक 'मानपत्र' भेंट किया था।

सन् 1633ई0 में केशव चन्द्र सेन ने महिलाओं की शिक्षा हेतु विक्टोरिया कॉलेज खोला जिसका मुख्य उद्धेश्य स्त्री शिक्षा को बढावा देना था।[10] केशव चन्द्र सेन के प्रयासों का एक अन्य परिणाम था, 'वामा हितैनी सभा' की स्थापना। इसकी स्थापना 14 अप्रैल सन्1871ई0 में हुई। इस सभा की अध्यक्षता केशव चन्द्र सेन द्वारा प्रत्येक शुक्रवार को आयोजित की जाती थी। सन् 1863ई0 में आरम्भ हुई 'वामा बोधिनी पत्रिका' इस समय तक लगभग 400 से अधिक प्रतियों का प्रकाशन करती थी। इस सभा में ये सभी पेपर पढ़े जाते थे। इसके अतिरिक्त अन्य विषयों

पर भी चर्चा होती थी'[11]

**निष्कर्ष**

उपरोक्त अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि 18वीं सदी में महिलाओं की स्थिति शोचनीय थी। केशव चन्द्र सेन ने इस स्थिति को सुधारने का प्रयत्न किया। हालॉकि सरकार केशव चन्द्र सेन के विचारों को ज्यों का त्यों स्वीकार नहीं कर सकी लेकिन बहुविवाह प्रथा का उन्मूलन बाल विवाह व अंतर्जातीय विवाह पर रोक आदि कुछ महत्वपूर्ण मामले थें जिनमें केशव चन्द्र सेन काफी हद तक सफल रहे। केशव चन्द्र सेन ने स्त्रियों की उदारवादी शिक्षा पर अधिक बल दिया। स्त्री शिक्षा में केशव चन्द्र सेन का योगदान अविस्मरणीय है। समाज सुधारक राष्ट्र निर्माता, पंथ निरपेक्षवाद के लेखक के रूप में यह केशव चन्द्र सेन के जीवन की सबसे बड़ी विजय थी।

**संदर्भ ग्रंथ**

1. प्रकाश बुद्वः *भारतीय धर्म एवं संस्कृति* (मीनाक्षी प्रकाशन) पृ0 217
2. मुखर्जी अरूण कुमारः *केशव चन्द्र सेन (आधुनिक भरत के निर्माता* 1995) पृ0 14
3. प्रकाश बुद्वः *भारतीय धर्म एवं संस्कृति* (मीनाक्षी प्रकाशन) पृ0 215
4. Borthwick Meredith: *Keshub Chunder Sen (* A search for cultural synthesis (1977) Page **174.**
5. Sastri Siyanath: *History of the Brahmo Samaj* (II Edition 1974) Pg. **89**
6. Mozoomdar PC: *The life and teaching of Keshub* Chunder Sen 1887) Pg. **143.**
7. मुखर्जी अरूण कुमारः केशव चन्द्र सेन (*आधुनिक भरत के निर्माता* 1995) पृ0 20
8. Kayal Kasinath: *Kekshub Chunder Sen* ( A study in Encouter & Response 1998) page. **88**
9. Kayal Kasinath: *Kekshub Chunder Sen* ( A study in Encouter & Response 1998) page. **94**
10. मुखर्जी अरूण कुमारः केशव चन्द्र सेन (*आधुनिक भरत के निर्माता* 1995) पृ0 32
11. Kayal Kasinath: *Kekshub Chunder Sen* ( A study in Encouter & Response 1998) page. **96**